International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 15-06-2020; Accepted: 30-06-2020; Published: 16-07-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 19-23

ऐतिहासिक नगर बिरसिंहपुर में ग्रामीण पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएं

सितेश भारती गोस्वामी
भूगोल विभाग, (अतिथि ब्याख्याता) शासकीय महाविद्यालय जैतवारा, सतना, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
ग्रामीण पर्यटन को हरित पर्यटन तथा फार्म पर्यटन का नाम भी दिया जाता है। यह स्वास्थ्यवर्धक पर्यटन है ,जो पर्यटन स्थलो के विकास को ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में देखता है । यह पर्यटन प्रादेषिक एवं कृषि समुदायों को प्रोत्साहन देता है। देष के विभिन्न राज्य अपने ग्रामीण अंचलो में विरासत से मिली परम्पराए, रीति रिवाज, कला संस्कृति, समेटे हुए है। यदि इन क्षेत्रों को संरक्षित एवं सुरक्षित करना है ,तो पर्यटन से जोड़ना ही उचित है। ताकि इनकी जानकारी सभी को हो सके। ऐसा ही एक त्रेतायुगीन नगर है, बिरसिंहपुर जो म0प्र0 के सतना जिले में उत्तर प्रदेष की सीमा पर स्थित है। जहां अनेक प्राचीन मंदिर ,प्राचीन मूर्तियां, कुण्ड, षिलालेख, भग्नावेष तथा दुर्लभ वन, वन्य जीव एवं औषधियां है। यदि इस क्षेत्र को पर्यटन के नक्षे से जोड़ दिया जाए तो इस क्षेत्र में लोगो को रोजगार की प्राप्ति होगी। एवं यहां के लोगेा का आर्थिक सामाजिक विकास होगा। बिरसिंहपुर नगर के प्राचीनतम स्मारको ,मंदिरो, वनो को सुरक्षित करके लोगो के रोजगार का एक अच्छा साधन बन कर उभरेगा। जो इस नगर के क्षेत्रीय विकास को तेजी से बढ़ाने में मददगार होगा।

मूल शब्दः ग्रामीण पर्यटन स्थल, बिरसिंहपुर नगर, समस्याएं एवं सम्भावनाएं

प्रस्तावना
आज पयर्टन के क्षेत्रो में काफी विकास किया जा रहा है लेकिन यह विकास शहरी क्षेत्रों में ही सिमट कर रह गया है। ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा एकदम नवीन है ,नगर में चौबीसों घण्टों ब्यस्त रहने वालों शोर षराबों भरे वातावरण के तनाव व झंझटो से मुक्ति पाने और नई ऊर्जा हासिल करने के लिए नगरो से दूर गांवो में शुद्ध एवं खुले वातावरण में कुछ समय बिताना चाहते है । पर्यटन मानव जीवन हेतु एक वरदान है जो मन मस्तिष्क को असीम शान्ति प्रदान करता है । पर्यटन ऐच्छिक रूप से किसी स्थान का भ्रमण करना है।पर्यटन उन प्रवृत्तियों एवं संबन्धों का गठजोड़ है जो यात्रा एवं प्रवासी के ठहरने से उत्पन्न होती है प्रारंभ में पर्यटन केवल घूमने एवं मनोरंजन के रूप में होता था। मानव वृत्ति के परिवर्तन से पर्यटन का क्षेत्र भी व्यापक होता गया। आज वर्तमान में म0प्र0 के अनेक क्षेत्रो में पर्यटक स्थल है । जहां लोग घूमने एवं तीर्थाटन हेतु जाते है जिससे इन क्षेत्रों का विकास भी बड़ी तीव्र गति से हुआ है।म0प्र0 के सतना जिले में भी अनेक ऐसे स्थान है ,जहां पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।सतना जिले की बिरसिंहपुर तहसील भी एक ऐसा स्थान है जो प्राचीनतम एवं ऐतिहासिक नगर है जिसका वर्णन त्रेता युग, महाभारत युग, मध्यकाल, मुगलकाल एवं आधुनिक काल में हुआ है यहां पर अनेक ऐसे स्थान है जिनको ग्रामीण पर्यटन से जोड़कर यहां के आसपास के लोगो तथा दूरदराज से आये लोगो को इसका लाभ प्राप्त हो सकता है। बिरसिंहपुर नगर अनेक ऐतिहासिक तथ्यों केा समेटे हुए है यह नगर यदि ग्रामीण पर्यटन से जुड़ेगा तो लोगों को इस ऐतिहासिक नगर की जानकारियाँ प्राप्त होगी। पहले इस नगर को देवपुर के नाम से जाना जाता था। यहाँ के राजा बीरसिंह थे, इन्ही के नाम पर अब बिरसिंहपुर नाम से विख्यात हो गया है। इस नगर का अपना एक अलग धार्मिक महत्व है, यहां के षिव तालाब मे सभी तीर्थो का जल पड़ा हुआ है भगवान षिव की मूर्ति उज्जैन के महाकाल का ही रूप है। जिसकी स्थापना प्राचीन काल में स्वतः हुई थी। इसकी सत्यता का परीक्षण औरंगजेब ने आकर किया था। यदि इस क्षेत्र में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा मिलता है तो इस क्षेत्र का विकास तेजी से होने के साथ यहाँ के लोगों को रोजगार की प्राप्ति होगी ।

शोध प्रविधि
शोध परियोजना को व्यवहारिक स्वरूप प्रदान करने के लिए ऑकड़ो का संग्रह निम्न विधियों से किया है।
प्राथमिक ऑकड़ो के संग्रह हेतु साक्षात्कार , प्रत्यक्ष अवलोकन, जनश्रुति , लोकोक्ति, भेटवार्ता एवं अनुभाविक विधि का प्रयोग किया गया है।
द्वितीयक ऑकड़ो का संग्रह शासकीय कार्यालयो, पत्र एवं पत्रिकाओं , गैवीनाथ ट्रस्ट से प्राप्त प्राचीन अभिलेखों , षिल्पलेखों एवं फोटोग्राफ की सहायता से किया गया है।

उददेष्य
- अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण पर्यटन का विकास होगा तो लोगो को रोजगार की प्राप्ति होगी, जिससे यहां के लोगो का आर्थिक एवं सामाजिक विकास होगा।
- ग्रामीण पर्यटन से रोजगार बढेगा जिससे कृषि पर दवाब घटेगा और लोगो की समस्याए कम होगी।
- अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण पर्यटन के विकास से नगर का आर्थिक एवं सामाजिक विकास , सड़को का विकास तीर्व गति से होगा।
- बिरसिंहपुर नगर के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों की जानकारी से लोग परिचित होगे। तथा इनका संरक्षण एवं संवर्धन किया जा सकेगा।
- ऐतिहासिक नगर बिरसिंहपुर मे धार्मिक पर्यटन की समस्याओ एवं सम्भावनाओं का ऑकलन कर भावी विकास हेतु रणनीति तय कर करना है।

अध्ययन क्षेत्र
बिरसिंहपुर नगर म0प्र0 के सतना जिले के पष्चिमोत्तर दिषा में स्थित है। बिरसिंहपुर नगर की अक्षांषीय स्थिति $24^0 47'$ से 39^0 उत्तरी अक्षांषो से लेकर $80^0 58'$ से 52^0 पूर्वी देषांतरो के मध्य

स्थित है। यह एक प्राचीन नगर है जिसका क्षेत्रफल 354 वर्ग किमी तथा जनसंख्या 132460 है। यह नगर समुद्र तल से 321 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इस नगर के चारो ओर उत्तर एवं पूर्व में घने वनो का आवरण है । इस नगर का जनघनत्व 174 प्रतिवर्ग किलोमीटर है। यहां पर प्राचीन षिवमंदिर ,आश्रम तथा त्रेतायुगीन, महाभारत युगीन, ऐतिहासिक स्थल है। जिस कारण बड़ी संख्या में पर्यटक लोग पर्यटन हेतु आते है।

बिरसिंहपुर नगर का इतिहास

ऐतिहासिक दृष्टि से यदि हम बिरसिंहपुर नगर के विकास पर दृष्टिपात करते है तो पाते है कि इस नगर पर अनेक ऐसे चिन्ह भग्नावषेष के रूप में विद्यमान है जो हमें प्राचीन काल के पौराणिक इतिहास के अध्ययन की ओर अग्रेसित करते है। आज बिरसिंहपुर नगर भूतभावन भगवान भोलेनाथ की नगरी के रूप में जाना जाता है। इसी के साथ अनेको मंदिर ,मठ ,राजप्रसादो के भग्नावषेष की मौजूदगी इस नगर के पौराणिक नगर होने के प्रमाण सिद्ध करते है।

बिरसिंहपुर नगर के यदि हम वास्तविक इतिहास का पता लगाना चाहते है तो उसे विभिन्न कालो के आधार पर जान सकते है।–

1. **पौराणिक काल (प्राचीनकाल)** :– इतिहास के अध्ययन में धार्मिक ग्रंथो का विषेष योगदान है। इस आधार पर बिरसिंहपुर नगर अति प्राचीन नगरो की श्रेणी में आता है। बिरसिंहपुर नगर का वर्णन पद्म पुराण के पाताल खण्ड मे है जब भगवान राम ने अष्वमेघ यज्ञ का घोड़ा छोड़ा था तब देवपुर के राजा वीरमणि द्वारा अष्व पकड़ा गया। यह युद्ध चक्र माला नदी के किनारे हुआ। जिसमें वीरमणि के छोटे भाई बीरसिंह देव भी सम्मलित हुये। इस तथ्य के आाधार पर चक्रमाला नदी की प्रसांगगिगता पर विचार करे तो बिरसिंहपुर से 6 किमी0 की दूरी पर चकरा नाला बह रहा है। जिसके नाम से चकरा नामक गांव भी बसा है। अतः पद्म पुराण में वर्णित चक्रमाला नदी की प्रमाणिकता सिद्ध होती है। पुराण में वर्णित देवपुर नगर राजा बीरसिंह देव के नाम पर वर्तमान में बिरसिंहपुर के नाम से जाना जाता है। यह नगर अतिप्राचीन एवं वैभव शाली नगर है। यदि इस नगर के चारो ओर खोदाई की जाए तो अनेक ऐतिहासिक साक्ष्य मिलने के आषार है। भगवान षिव के मंदिर में गुप्त कालीन षिल्प कला के दर्षन प्राप्त होते है, जिससे यह स्पष्ट होता है गुप्त वंष के समय यह नगरी विद्यमान थी।
2. **राजपूत काल** :–राजपूत काल मे यहां पर एक क्षत्रीय वंष के राजा का शासन था । जिनका किला बिरसिंहपुर नगर से लगे हुए दक्षिण की ओर सितावा नदी के किनारे स्थित था। आज वर्तमान मे भी इस किले के अवषेष विद्यमान है आज इसी स्थान पर बिरसिंहपुर नगर का शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय संचालित हो रहा है। बिरसिंहपुर राजपूत शासको के कोई सन्तान न होने के कारण राज्य को तीन भागो में बॉट दिया गया है कुछ भाग पन्ना रियासत के राजा को ,कुछ सोहावल रियासत के राजा को तथा कुछ भाग रीवा रियासत के राजा को दे दिया गया। इसलिए बिरसिंहपुर में स्थित भगवान षिव का मंदिर सोहावल रियासत में था तथा तालाब के पूर्वी किनारे पर स्थित पार्वती जी का मंदिर पन्ना रियासत में था।
3. **मुस्लिम शासको का काल** :– मुस्लिम शासको के समय जनश्रुति है कि मुगल बादषाह औरंगजेब या इनके षिपहषालार इस नगर में मुस्लिम धर्म के प्राचार एवं मंदिर नष्ट कर लूटने के लिए यहां आये थे। ऐसा माना जाता है कि भगवान षिव के लिंग पर तीन टाकी लगाने पर भयानक अलौकिक घटनाएं घटित हुई जिससे मूर्ती तोड़ना बंद कर यहां से भाग गये। आज वर्तमान में भी भगवान षिव के लिंग में तीन जगह से टाकी लगी है इसलिए इन्हे फटहा बाबा के नाम से भी जाना जाता है।
4. **प्रजातंत्र काल** :– भारत की स्वतंत्रता के बाद स्टेटो का भारतीय संघ में विलय हो जाने के कारण यह नगर सतना जिले में समाहित हो गया। आज वर्तमान में यह तहसील भी बना दिया गया है। साथ ही इस नगर में शासकीय माहविद्यालय बिरसिंहपुर तथा शासकीय आईटीआई स्थापित कर दिया गया है।

बिरसिंहपुर नगर के दर्षनीय स्थल

बिरसिंहपुर नगर अपनी ऐतिहासिकता एवं धार्मिकता के लिए विख्यात है यहाँ अनेक ऐतिहासिक दर्षनीय स्थल है।

1. **गैवीनाथ मंदिर** :– जिला मुख्यालय से 34 किलोमीटर की दूरी एवं तहसील मुख्यालय के मध्य में स्थित है। इस नगर की स्थापना कब हुई इस विषय मत में विचारक मतैक्य नही है यहां पर रीवा राज घराने के बघेल राजाओं का राज्य था। प्राचीन काल में यह माना जाता है कि इस नगर में राजा बीरसिंह का शासन था। जिसका वर्णन पद्म पुराण के पाताल खण्ड में है ऐसी जनश्रुति है कि गैवी नाम के एक यादव यहां निवास करते थे जिनकी पत्नी के रसोई से इनकी उत्पत्ति हुई है। जब कई बार यह पिण्डी चूल्हे से थोड़ा सा ऊपर आती तो उसे मूसल के द्वारा दबा दिया जाता । इस प्रकार कई माह बीत जाने पर जब पिण्डी ऊपर नही आ पाई तो स्वयं महाकाल भगवान राजा के स्वप्न में आये तब राजा ने उस स्थान को अलग काराया और पिण्डी बाहर आई इस प्रकार गैवी नामक यादव के घर से निकलने के कारण इस मंदिर का नाम गैवीनाथ पड़ा यह मंदिर बड़ा ही भव्य है। यहां पर स्थित मंदिर के सामने ही सुन्दर सरोवर स्थित है। भगवान षिव पर अभिषेक के उपरान्त जल इसी सरोवर मे विसर्जित होता है। जिससे अनेक पवित्र तीर्थ स्थलो का जल इस सरोवर में हैं।

विक्रम सम्वत् 1788 में महाराजा छत्रसाल ने यह क्षेत्र बघेलों से जीत लिया सम्भवतः इसी समय तालाब की सीढ़ियां और मंदिर की ढलान बनाई होगी। यह तालाब लगभग 100 मीटर वर्गाकार क्षेत्र में स्थित है। यह मंदिर मुगल काल में खण्डित हुआ था। औरगंजेब अथवा इसके षिपहसालार ने भगवान षिव के इस पिण्ड को खण्डित करने का प्रयास किया था आज भी तीन धारियां स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। कहा जाता है कि धर्म एवं सत्यता परीक्षण हेतु ऐसा किया गया था। इस मंदिर का रखरखाव आज वर्तमान में गैवीनाथ सार्वजनिक ट्रस्ट कर रहा है । एक अध्यक्ष ,पुजारी एवं अन्य लोग है। प्रथम पुजारी के रूप में मंहत स्व0 बहोरी गोस्वामी एवं वासुदेव गोस्वामी हुये आज इन्ही के वंषज पूजा अर्चना करते आ रहे है।

इस मंदिर में प्रति सोमवार ,पूर्णमासी, षिवरात्री , बसंतपंचमी एवं प्रति चौथे वर्ष पड़ने वाले पुरूषोत्तम मास में मेला लगता है। बड़ी मात्रा में दूरदराज से दर्षनार्थी अपने मनोरथ लेकर आते है। और पूरे होने पर यहीं कथा, भण्डारा एवं षिव पार्वती का गठबन्धन करवा कर पुण्य प्राप्त करते है।

2. **पार्वती मंदिर** :– षिव सरोवर के दूसरे छोर पर माता पार्वती मंदिर स्थित है जो पन्ना रियासत के अन्तर्गत आता है। ऐसा कहा जाता है कि जब रियासतो का समय था तो षिव मंदिर सोहावल स्टेट में तथा पार्वती मंदिर पन्ना स्टेट के अन्तर्गत था। भक्त अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर षिव एवं पार्वती का गठबन्धन करवाते है। इसके अतरिक्त मंदिर के पास अनेक देवी देवताओं की मुर्तीया स्थापित है जो अत्यन्त प्राचीन काल की है।

3. **परमहंस आश्रम (धारकुण्डी):** बिरसिंहपुर तहसील मुख्यालय से 25 किमी0 एवं जिला मुख्यालय से 70 किमी0 से दूर स्थित है। यह स्थान प्रकृति एवं अध्यात्म का मिलन स्थल है। सतपुड़ा पठार की विंध्याचल पर्वत श्रृंखलाओं में स्थित परमहंस आश्रम में प्राकृतिक छटा देखने को मिलती है। पर्वत की कंदराओ में साधना स्थल, दुर्लभ शैल चित्र, पहाड़ों में अनवरत बहती जल धारा , गहरी खाईया और चारो ओर से घिरे घनघोर जंगल के बीच स्वामी सच्चिदानंद जी के पमरहंस आश्रम में यहां पर्यटन और अध्यात्म को एक सूत्र में पिरो रखा है। यहां बहुमूल्य औषधियां एवं प्राचीन जीवाष्म भी पाये जाते है। यहां आने से मन को असीम शांति का अनुभव होता है। प्राकृतिक सौदर्य को देखकर यहां से जाने हेतु मन नही करता। धारकुण्डी नाम जल की धारा और जलकुण्ड के कारण पड़ा है। पर्वत श्रेणियों के मध्य से प्रस्फुटित जल की निर्मल धारा से प्रकृति जलकुण्ड का निर्माण हुआ है। समुद्र तल से 1050 फुट स्थित होने के कारण प्राकृतिक छटाएं निराली दिखाई देती है। आश्रम से ही कुछ दूरी पर अघमर्षण कुण्ड है। ऐसा माना जाता है। कि पाण्डव अपने वनवास काल में यहां आये थे प्यास से व्याकुल होकर इस कुण्ड में जल पीने के लिए गये तो मूर्छित हो गये ।तब धर्मराज युद्धिष्टिर एवं यक्ष के बीच संवाद हुआ। इसलिए यह स्थान वहां महत्वपूर्ण है। वर्तमान में स्वामी परमानन्द जी परमहंस जी के सानिध्य मे सच्चिदानंद जी ने चित्रकूट के अनुसुईया आश्रम में 11 वर्ष साधना की इसके बाद 1956 में यहां आये। और साधना मे लीन हो गये। फिर यहां आश्रम का निर्माण हुआ। अतिथियों के लिए सन्तो एवं महात्माओं के द्वारा प्रतिदिन भोजन का निर्माण कर आने वाले लोगो को सेवा भाव से प्रसाद रूप में खिलाया जाता है। यहां प्रायः सप्तमी तिथि रविवार एवं गुरू पूर्णिमा को बड़ी मात्रा में दर्षनार्थी आते है और स्वामी जी के आर्षिवाद से अनुगृहीत होते है। यह क्षेत्र घने वनो से परिपूर्ण होने से अनेक वन्य जीवो का प्राकृतिक षरण स्थल है जहां वन्य जीव स्वतंत्र विचरण करते हुए दिखाई देते है पास ही उत्तर प्रदेष की सीमा है जहां पर रानीपुर वन्य जीव अभ्यारण्य है जहां के अनेक वन्यजीव यहां आकर कुण्ड में पानी पीते है एवं भोजन के लिए षिकार करते है। यह आश्रम प्राकृतिक पर्यटन के रूप में अपनी पहचान बना सकता है।

4. **सरभंग ऋषि आश्रम :–** जिला मुख्यालय से 55 एवं तहसील मुख्यालय से 14 किमी0 की दूरी पर सरभंग ऋषि आश्रम स्थित है । इस स्थान का वर्णन त्रेता युग में हुआ है एवं तुलसी कृत रामायण अरण्य काण्ड में भी हुआ है। भगवान श्रीराम ने वनवास का कुछ समय यहां बिताया इसके बाद वे चित्रकूट चले गये थे। भगवान श्रीराम अपने वनवास के दौरान यहां सरभंग मुनि को दर्षन देने आये थे क्योंकि उन्हे भगवान राम का इंतजार करते हुए कई वर्ष बीत गये । तो वह अपने प्राण त्याग कर ब्रम्हा लीन होना चाहते थे। इसलिए भगवान राम उन्हे दर्षन देने के लिए यहां आये थे। यहां अनेक स्थानो पर त्रेतायुगीन भगवान राम, सीता ,लक्ष्मण सहित अन्य देवी देवताओं कि ऐतिहासिक मुर्तिया विद्यमान है। सरभंग आश्रम के पास ब्रम्ह कुण्ड स्थित है जिसकी जल धराये कभी नही सूखती है। यही पर आश्रम के सामने दो कुण्ड स्थित है। जिसमें एक में माता सीता , दूसरे मे भगवान श्रीराम स्नान करते थे। सरभंग आश्रम के कुछ दूर पर घोड़ामुखी मंदिर स्थित है। तथा सरभंगा के जंगलो में उत्खनन से एक साथ कई यज्ञ वेदियां प्राप्त हुई जिससे पता चलता है कि पुराने समय मे यज्ञ आहूति की जाती थी आज वर्तमान में भी उत्खनन से भी अनेक प्राचीन मूतियां प्राप्त होती है जिन्हे निकाल कर यही के एक कमरे में सुरक्षित रखा जा रहा है यह स्थान पूरी तरह प्राकृतिक वनस्पतियो एवं वन से घिरा है अक्स्मात ही यहां वन्य जीवों जैसे बाघ,चीता, हिरण, नीलगाय,सांभर,भालू ,चीतल,तेदुआ, तथा अन्य प्रकार के वन्यजीवो को विचरण करते हुए देखा जा सकता है। इस आश्रम का ऐतिहासिक ,धार्मिक एवं प्राकृतिक रूप से बड़ा महत्व है । यहां प्रतिवर्ष दीपावली एवं संक्राति में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पुण्य स्नान कर दीप एवं खिचड़ी का दान कर पुण्य प्राप्त करते है। आज भी बड़ी मात्रा में सन्त महात्मा यहां आकर धूनी रमाते है। यही पास में गुदड़िया बाबा आश्रम है जो अत्यन्त रमणीक है।

5. **सुतीक्षण ऋषि आश्रम :–** तहसील मुख्यालय से 9 किमी0 दूर बिरसिंहपुर चित्रकूट मार्ग पर स्थित है। सरभंग आश्रम की ही भांति सुतीक्षण ऋषि आश्रम में भी भगवान राम वनवास के समय गये थे। और अपने वनवास का कुछ समय यहीं व्यातीत किया था। इस आश्रम का वर्णन महाकवि कालिदास एवं गोस्वामी तुलसी दास जी ने अपनी रचनाओ में किया है। वर्तमान में यहां एक छोटा सा मंदिर स्थित है जिसमें श्रीराम जानकी एवं लक्ष्मण जी की मूर्ति विद्यमान है। पास ही एक कुण्ड स्थित है जिसमें निरन्तर जल की धराएं निकलती रहती है। यही आगे चलकर नदी का रूप ले लेती है इस आश्रम को बोदा आश्रम के नाम से भी जाना जाता है।

सरभंग ऋषि आश्रम में उत्खनन से प्राप्त ऐतिहासिक मुर्तिया

सरभंग ऋषि आश्रम में उत्खनन से प्राप्त यज्ञ वेदियां एवं प्राचीन मूतियां

6. **सिद्धा आश्रम :–** बिरसिंहपुर के मुख्याल से 8 किमी0 की दूरी पर सिद्धा पहाड़ के निकट स्थित है। यहीं से गहवर नदी का उद्गम है। जो इस आश्रम के नजदीक से गुजरती है। यह आश्रम इस नदी के कलकल करती हुई ध्वनि एवं शान्त वातावरण से लोगो को अपनी ओर आकर्षित करता है। इस आश्रम का वर्णन त्रेता युग में हुआ है। जो सरभंग ऋषि आश्रम से कुछ ही दूर पर स्थित है यहां भी लोग संक्राति में स्नान करने एवं घूमने आते है।
7. **षग्गर बाबा आश्रम :–** बिरसिंहपुर से 10 किला0 दूरी पर जैतवारा कुलकड़िया मार्ग पर स्थित यह आश्रम अपने प्राचीन कुण्ड के लिए प्रसिद्ध है। जिसमें एक चौरस आकार का बड़ा जलाषय है। जिसमें पानी निकट स्थित कुण्ड से आता है। आगें चलकर जलाषय से एक नदी का उद्गम होता है। यहां भी पर्यटक प्राकृतिक सौदर्य का आनन्द ले सकते है।
8. **चकरा नाला :–** यह मुख्यालय से 6 किमी0 की दूरी पर है जिससे बिरसिंहपुर में बहने वाली सितावा नदी (चक्रमाला) का होता है। इसी नदी के किनारे तक भगवान श्रीराम आये थे। तथा यहां से चित्रकूट की ओर प्रस्थान कर गये थे। वर्तमान में इस नदी पर एक स्टापडैम का निर्माण कर गैवीनाथ षिव सरोवर मे जल भरने का कार्य किया जाता है। यह नदी इस नगर की जीवन रेखा है इसे शीतमती गंगा भी कहते है।
9. **दानव बाबा आश्रम :–** बिरसिंहपुर नगर से 4 किलोमीटर दूर सेमरावल नदी के किनारे यह आश्रम स्थित है यहां पर दूर दराज से लोग दानव बाबा की शरण में आते है और अपनी दैविक बाधाओं से मुक्ति पाते है।

अन्य दर्षनीय स्थल :– मुख्यालय से बुछ ही दूरी पर अनेक दर्षनीय आश्रम स्थित है जैसे मौनीबाबा आश्रम, शीतला माता मंदिर, बहोरियन आश्रम , श्री साई मंदिर, रामजानकी मंदिर, नगौरा हनुमान मंदिर एवं जलकुण्ड ,मचखड़ा आश्रम ये सभी भी दर्षनीय है।

बिरसिंहपुर नगर में पर्यटन की समस्याए

बिरसिंहपुर नगर में ग्रमीण पर्यटन को रोकने के लिए अनेक ऐसे कारण है जिससे यहां का विकास तीव्र नही हो रहा है –

- बिरसिंहपुर नगर में पहुँचने के लिए मुख्य मार्ग सतना से सेमरिया एवं रीवा सुन्दरा स्टेट हाइवे 52 है कोटर से ग्रामीण सड़क के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। लेकिन अन्य सभी पर्यटन स्थलों में पहुँचने हेतु सड़को का विकास कम है।
- नगर के चतुर्दिक स्थित पर्यटन स्थलों में जाने हेतु वाहनो का आभाव है। जिससे ये पर्यटन स्थल उपेक्षित है।
- सरभंगा ,धारकुण्डी एवं सुतीक्षण आश्रम घने जंगलो के मध्य स्थित है जिससे यहां जाने पर जंगली वन्य जीवो से खतरा बना रहता है जिससे पर्यटक स्वतंत्रता पूर्वक भ्रमण नही कर पाते है।
- नगर में खाने पीने के लिए की पर्याप्त सुविधाएं है, किन्तु पर्यटको के रूकने के लिए कोई भी लॉज, होटल एवं रैन बसेरा नही है।
- नगर में अनेक धर्मषलाए पहले थी लेकिन रख रखाव के अभाव एवं अतिक्रमण होने के कारण अब इनका उपयोग जन साधारण एवं यात्री नही कर पा रहे है।
- नगर मे आने वाले पर्यटको के वाहनो के लिए उत्तम पार्किंग एवं बैठक व्यवस्था नही है।
- बसों एवं यात्री वाहनो की समय सारणी भी उपलब्ध नही है। तथा सड़के जर्जर होती जा रही है।
- मुख्य मार्ग का छोड़कर मंदिर के चतुर्दिक अनेक प्रकार की दुकानो के कारण रास्ते संर्कीण है। जिससे यात्रियों को आने जाने में परेषानी हो रही है।
- यहां के मंदिरो का रख रखाव साफ सफाई परिक्रमा एवं पानी पीने की ब्यवस्था उचित ढंग से ट्रस्ट द्वारा नही होती है।
- मेला एवं अन्य समय लगने वाली दुकानो एवं वाहनो से नगर पंचायत द्वारा वेजा वसूली बैठकी एवं पार्किंग के नाम से की जाती है। जिससे यहां आने वाले बाहरी दुकानदार कम होते जा रहे है।
- मेला एवं भीड़भाड़ में यात्रियों से बदसलूकी एवं जेब कतरो के द्वारा लूटपाट की घटनाएँ होती है।

ग्रामीण पर्यटन हेतु सभांवनाऐं :

- नगर में पर्यटन को बढ़ाने हेतु सड़क मार्गो को ठीक किया जाए। तथा सबसे नजदीकी रेल मार्ग स्टेषन सतना एवं जैतवारा है यहां से नियमित बस एवं टैक्सी सेवाएं प्रदान होने से पर्यटन में वृद्धि होगी।

- ग्रामीण पर्यटन क्षेत्रों को विकसित किया जाए ताकि लोगो को ऐतिहासिक विरासत एवं अपनी संस्कृति देखने का मौका मिल सके। ग्रामीण पर्यटन हेतु इन पर्यटन स्थलो में जाने के लिए वाहन एवं गाइड उपलब्ध हो।

- बिरसिंहपुर नगर के इन तीर्थ स्थलो का नाम रामपथ गमन में सम्मिलित है यदि रामपथ गमन का निर्माण होता है तो इन सभी पर्यटन केन्द्रो का विकास बड़ी तेजी से होगा।
- नगर में आने वाले समस्त मंदिरो की देखरेख एवं संरक्षण उचित ढंग से किया जाय तथा रात्रि विश्राम हेतु बिरसिंहपुर नगर में रैन बसेरा , धर्मषालाए एवं लॉज बनाई जाए।
- बिरसिंहपुर नगर के पर्यटन क्षेत्रों को पहचान दिलाने हेतु इनका मीडिया ,समाचार पत्रो ,षोसल साइटो के द्वारा प्राचार प्रसार किया जाए जिससे लोगो को इन क्षेत्रो की जानकारी सरलता से प्राप्त हो सके।
- बिरसिंहपुर नगर के पर्यटक स्थल ऐतिहासिक तथ्यों को समेटे हुए है। यदि इनकी जानकारी पूरातत्व विभाग के द्वारा यहां अंकित करा दी जाए एवं इन क्षेत्रों को म0प्र0 के पर्यटन नक्षे में जोड़ दिया जाए। तो यहां पर ग्रामीण पर्यटन में तेजी से बृद्धि होगी।
- पर्यटको को आधारभूत सुविधाएं ,भोजन ब्यवस्था , बैकिंग , बाजार, स्वास्थ्य सुरक्षा , यात्रा स्थलों की सम्पूर्ण जानकारी प्रदान कर पर्यटन को बढ़ाया जा सकता है।

निष्कर्ष

बिरसिंहपुर नगर अपनी ऐतिहासिक ,धार्मिक ,प्राकृतिक एवं भब्य मंदिरो और स्मारको के लिए जाना जाता है। यदि यहां पर ग्रामीण पर्यटन को विकसित किया गया तो लोगो की आय मे वृद्धि होगी। यहां पर सरभंगा एवं धारकुण्डी आश्रम सघन वनो से घिरा है जहां विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधे एवं वन्य जीव विचरण करते रहते है। यदि इस क्षेत्र को अभ्यारण्य का दर्जा दे दिया जा तो यहां पर इकोटूरिज्म को बढ़ावा मिलेगा। लोगो को जिससे लोगो को प्रकृति के साथ प्रेम एवं उसकी अनुपम छटाएं देखने का अवसर प्राप्त होगा। आज वर्तमान में बढ़ती जनसंख्या सभी क्षेत्रों की चिन्ता का विषय है जिसका दवाब कृषि भूमि पर अधिक पड़ता है यदि इन क्षेत्रो में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिया जाय तो पर्यटन उद्योग के द्वारा लोगो को रोजगार के साथ आनंन्द की अनुभूति होगी। ग्रामीण पर्यटन से लोगो के जीवन स्तर में सुधार के साथ क्षेत्र के सांस्कृतिक ,पूरातात्विक स्थलो का संरक्षण एवं जीर्णोद्धार हो सकेगा जिससे क्षेत्र का आंचलिक विकास तीब्रता से बढ़ेगा।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ0 बन्सल, सुरेष चन्द्र : भारत का वृहत भूगोल, मीनाक्षी प्रकाषन,(2015),पृष्ठ क्रमांक 796–799
2. डॉ0 श्रीवास्तव. लोकेष : म0प्र0 का भूगोल, शारदा प्रकाषन,(2010),पृष्ठ क्र0 132,133
3. डॉ0 यादव, मनोज कुमार : मिर्जापुर जिले के बाह्य पर्यटन केन्द्रो का भौगोलिक अध्ययन (षोध पत्र), सिम्बर 2019, पृष्ठ क्रं0 144–145
4. डॉ0 सिंह, अरूण : बिन्ध्य प्रदेष के धार्मिक पर्यटन केन्द्रो का भौगोलिक अध्ययन, शोध प्रबंध ,अवधेष प्रताप सिंह विष्वविद्यालय रीवा, पृष्ठ क्रं0 172–175
5. डॉ0 मिश्र, प्रत्यूष : बुन्देखण्ड उत्तरप्रदेष में पर्यटन विकास नियोजन,(2002), शोध प्रबंध बुन्देलखण्ड विष्वविद्यालय झॉसी उत्तरप्रदेष
6. डॉ0 सिंह, बी0पी0 एवं सिंह, सुमंत : म0प्र0 में पर्यटन, आदित्य प्रकाषन, बीना
7. ऐतिहासिक प्रभाव शाली और छत्रषाल पृष्ठ क्रं0 117
8. रीवा का बघेल राजवीरभद्र
9. शीवेन्द्र कुमार सोनी ,बिरसिंहपुर नगर का भौगोलिक अध्ययन ,प्रोजेक्ट वर्क ,पृष्ठ क्रं0 2–5
10. गजेटियर रीवा संभाग